मुड़मा मेले का भ्रमण करने पहुंचे आईजीएनसीए के विद्यार्थी

कई सांस्कृतिक पहलुओं का किया अध्ययन

रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के रांची क्षेत्रीय केन्द्र के विद्यार्थियों ने झारखंड स्थित विख्यात जनजातीय मुड़मा मेला का भ्रमण किया। बता दें कि इसी वर्ष से रांची क्षेत्रीय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जनजातीय कला एवं शिल्प विषय पर एक पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की शुरूआत की है। इस पाठ्यक्रम के लिए 30 से अधिक विद्यार्थियों ने यहां नामांकण कराया है। इन्हीं विद्यार्थियों को लेकर कला केन्द्र के निदेशक अजय कुमार मिश्र 14 व 15 अक्टूबर को मुड़मा मेला गए थे। इस दौरान विद्यार्थियों ने जनजातीय संस्कृति, कला एवं शिल्प को जानने की कोशिश की। केन्द्र की पाठ्यक्रम समन्वयक अपरणा झा ने बताया कि इस मेले में केन्द्र के द्वारा संचालित जनजातीय कला और शिल्प कला कोर्स के 15 स्नातकोत्तर डिप्लोमा छात्रों के समूह ने भाग लिया और इस मेले के सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं का अध्ययन किया। इस मेला भ्रमण कार्यक्रम में रांची विश्वविद्यालय जनजातीय भाषा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ.गिरिधारी राम गंझू, प्राख्यात लेखक एवं चिंतक महादेव टोप्पो और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय मानव विज्ञान विभाग के विभागाध्यख डॉ एस. एम. अब्बास ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। इस भ्रमण के दौरान छात्र मेले के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, लोक महत्वों का विस्तृत अध्ययन किया। इस संदर्भ में झा ने बताया कि मुड़मा मेला एक बहुत ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जो लोक कथाओं के अनुसार प्राचीन समय से चली आ रही है। इस मामले में केन्द्र निदेशक अजय कुमार मिश्र ने बताया कि मेले और त्यौहार भारतीय सामाजिक-सांस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। मुड़मा मेला भी आदिवासियों का एक ऐसा ही लोकसंगम त्योहार है, जो पाड़हा तंत्र द्वारा पारंपरिक रूप से आयोजित किए जाने वाले 40 गांवों के लोगों को प्रदर्शित करता है। उन्होंने बताया कि यह एक बहुत प्राचीन मेला है जिसमे पुनरोद्धार आंदोलन का प्रभाव दीखता हैऔर इसका प्रभाव वर्तमान में आदिवासी समुदायों के बीच दिखाई पड़ता है। मिश्र ने बताया कि इसे आप आदिवासी नवजागरण का मेला भी कह सकते हैं। इस मेले की उत्पत्ति के संदर्भ में कई पौराणिक कथाओं को साक्ष्य माना जाना चाहिए। दरअसल, यह मेला मुंडा व उड़ाव संस्कृति का मिलन है। एक कथा में यह कहा गया है कि उरांव और मुंडा जनजातियों के बीच एक सांस्कृतिक प्रतियोगिता हुई (क्योंकि दोनों जनजातीय समुदाय नृत्य और संगीत के बारे में बहुत संवेदनशील थे) प्रतियोगिता की कड़ी शर्त यह थी कि जो भी इस प्रतियोगिता में हारेगा उसे मुड़मा क्षेत्र से पलायन करना होगा। अंततः एक सप्ताह तक चलने वाले सांस्कृतिक युद्ध के कठिन दौर के बाद उरांव जनजाति समुदाय ने प्रतियोगिता जीत ली। मिश्र ने बताया कि हमारे छात्रों ने मेले में कई स्तर पर अध्ययन किया है। उन्होंने कहा कि इस मेले में अंतर ग्राम सहयोग और निर्भरता भी परिलक्षित होती है। इन मेलों और त्यौहारों के रंग और जीवंतता की भावना उस एकता को रेखांकित करती है जो एक साथ विशाल विविध समूहों को आकर्षित करती है। दो दिवसीय मेला प्रवास के बाद बुधवार को केन्द्र के विद्यार्थियों ने अपने-अपने अध्ययन नोट आपस में साझा किया। केन्द्र निदेशक मिश्र ने बताया कि छात्रों के द्वारा जो नोट आए हैं वह हमें इस दिशा में और चुनौती लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। हम आगे और सक्रियता से इस दिशा में प्रयास करेंगे। हम चाहेंगे कि हमारे छात्र आदिवासी चिंतन और दर्शन में भी सिद्धस्त हों।

मुड़मा मेला में सामूहिक अध्ययन

रांची. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची के विद्यार्थियों ने मुड़मा मेला का दौरा कर सामूहिक अध्ययन किया. इसका नेतृत्व क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्र कर रहे थे. इस मौके पर विद्यार्थियों ने जनजातीय कला और शिल्प कला कोर्स के 15 स्नातकोत्तर छात्रों के समूह ने भाग लिया और सांस्कृतिक व सामाजिक पहलुओं का सामूहिक अध्ययन किया. डॉ गिरधारी राम गंझू, महादेव टोप्पो, डॉ एसएम अब्बास ने मुड़मा मेला के ऐतिहासिक महत्व की जानकारी दी. बताया कि यह मेला बहुत ही प्राचीन और पड़हा तंत्र द्वारा पारंपरिक रूप से आयोजित किये जानेवाले 40 गांवों के लोगों को प्रदर्शित करता है. विद्यार्थियों ने स्थानीय कारीगरों द्वारा तैयार की गयी कलाकृतियों का अवलोकन किया. मौके पर कोर्स को-ऑर्डिनेटर डॉ अर्पणा झा ने भी कई जानकारियां विद्यार्थियों को दीं.